ए. पी. एस. एम. कॉलेज, बरौनी
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

हिन्दी विभाग, स्नातक प्रथम वर्ष(प्रथम पत्र)
सत्र-2020-2023,

डॉ मेनका कुमारी

- **भक्तिकाल की आर्थिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि**

- तुर्कों के द्वारा भारत में शासन कायम करने से लेकर शाहजहाँ तक के राजनीतिक इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य केंद्रीकृत शासन व्यवस्था है। तुर्कों के पतन और मुगल साम्राज्य के स्थापित होने के बीच के कुछ वर्षों को छोड़ दें तो पूरा उत्तर भारत एक केंद्रीकृत शासन व्यवस्था के अधीन रहा। कभी-कभी तो साम्राज्य का विस्तार दक्षिण भारत और बंगाल तक फैल गया। केंद्रीकृत और स्थिर शासन का अर्थ-व्यवस्था पर सबसे अच्छा प्रभाव पड़ता है। इसे हम उत्तर भारत के संदर्भ में भी देख सकते हैं।

- तुर्कों ने शासन-व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए केंद्रीय प्रशासन और स्थानीय प्रशासन की व्यवस्था की। आय और व्यय का हिसाब रखने के लिए अधिकारियों की नियुक्तियाँ की गईं। साम्राज्य को विभिन्न सूबों में बाँटा गया और फिर सूबों को भी विभाजित किया गया, जिसे उस समय शिक कहा जाता था। शिक के नीचे परगने होते थे। गाँव में खुत, मुकद्दम, पटवारी के माध्यम से भू-राजस्व की वसूली की जाती थी। इस तरह केंद्र से लेकर गाँव तक एक सुचारू व्यवस्था कायम हुई। तुर्कों द्वारा स्थापित प्रशासनिक व्यवस्था आगे के शासकों द्वारा भी कुछ सुधारों के साथ अपनाई जाती रही।

शहरी समाज एवं व्यापार

- तुर्कों के आने के बाद दूसरा महत्वपूर्ण परिवर्तन शहरों का उदय है। दिल्ली, आगरा, बनारस, इलाहाबाद, पटना आदि कई शहरों का उदय हुआ। ये शहर आगे चलकर प्रमुख व्यापार केंद्र बने। शहरों के साथ-साथ छोटे-छोटे कस्बों का भी उदय हुआ। व्यापार के माध्यम से गाँव, कस्बे और शहरों से संबंध स्थापित हुआ। इस तरह गाँव का अलगाव दूर हुआ।
- तुर्कों के साथ नई तकनीक भारत आई। इनमें चरखा, धुनकी, रहट, कागज, चुम्बकीय कुतुबनुमा, समय-सूचक उपकरण, घुड़सवार सेना, प्रौद्योगिकी प्रमुख हैं। नई तकनीकों का प्रभाव उद्योग तथा व्यापार पर पड़ा।

- चरखे के आने से वस्त्र उद्योग में काफी बढ़ोतरी हुई। कारीगर की क्षमता बढ़ जाने से वस्त्र उद्योग भारत का सबसे बड़ा उद्योग हो गया। इसी काल में धुनकी भी आयी। धुनकी के आने से रुई से बीज निकालने की प्रक्रिया में भी तेजी आई। नील एवं अन्य वनस्पतिक रंजकों से अनेक चमकीले रंग बनाए जाते थे। इस तरह देखें तो वस्त्र उद्योग से भारी संख्या में लोगों को रोज़गार मिला। मुहम्मद बिन तुगलक के कारखानों में 4000 रेशमकर्मी थे जो भिन्न-भिन्न प्रकार की पोशाकों और वस्त्रों की बुनाई और कसीदाकारी करते थे। कबीरदास का संबंध इसी उद्योग से था। कबीर के साहित्य में कई रूपक बुनाई उद्योग से हैं। “झीनी झीनी बीनी चदरिया” इसका प्रसिद्ध उदाहरण है।

- इस दौर में सड़कों के निर्माण का कार्य बड़े पैमाने पर हुआ। तुर्क शासक शेरशाह, मुगल शासक सभी ने सड़कें बनवायीं और सड़कों के किनारे सराय बनाकर यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था की। इसका सीधा प्रभाव व्यापार पर हुआ। इन शासकों ने व्यापार के विकास पर बहुत ध्यान दिया । उन्होंने व्यापारिक मार्गों पर सुरक्षा की व्यवस्था की। राहजनी की घटनाओं को रोकने के लिए विशेष कानून बनाया गया, जिसका सख्ती के साथ पालन किया जाता था।

- इस काल में शुरू होने वाला नया उद्योग कागज निर्माण का था। इसका सीधा प्रभाव व्यापार पर हुआ। हुंडी के माध्यम से सुरक्षित व्यापार का रास्ता खुल गया। इसके अतिरिक्त भवन-निर्माण उस काल में काफी हुआ। तुर्कों के आने के बाद से लेकर मुगल काल तक कई नगर बसे। किलों और महलों का निर्माण भी बहुत हुआ, जिसके परिणामस्वरूप राजमिस्त्री एवं पत्थर तराशियों का महत्व काफी बढ़ गया। कुल मिला कर देखें तो इस काल में नए शिल्पी वर्ग का उदय हुआ। भक्तिकाल के कई संत कवि इस शिल्पी वर्ग से आते हैं।

- तुर्कों से लेकर मुगल काल तक उत्तर भारत में देशीय व्यापार के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय व्यापार भी बढ़ गया। यहाँ से सूती वस्त्र का निर्यात बहुत ही बड़े पैमाने पर होता था। भारत में ऐसे बहुत से बंदरगाह थे जहाँ से विभिन्न देशों से व्यापार होता था। भारत दक्षिण-पूर्वी एवं पश्चिमी एशिया के कई देशों को चीनी, चावल आदि जैसे खाद्य पदार्थ भेजता था। इस पूरे दौर में व्यापार और उद्योग में काफी वृद्धि हुई जिसके परिणामस्वरूप व्यापारी समुदाय आर्थिक रूप से काफी सम्पन्न हुआ। मुगल काल के कुछ शासक खुद व्यापार करते थे।

- एक तरह से सामंती समाज व्यवस्था (जो भू-राजस्व पर आधारित होती है) के भीतर पूँजीवाद (जो उद्योग एवं व्यापार पर आधारित होता है) का विकास हो रहा था। इसके बावजूद नगरों में बड़ी संख्या में गरीब लोग मौजूद थे जिनका जीवन मुश्किल से चलता था।

ग्रामीण समाज

- गाँव के किसानों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। बार-बार उन्हें अकाल का सामना करना पड़ता था। सिंचाई के साधनों (रहट आदि) के आने से उत्पादन में बढ़ोत्तरी हुई और गाँव के लोग वस्त्र उद्योग से जुड़े, फिर भी स्थिति में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं हुआ। कई बार तो किसानों ने विद्रोह भी किया, लेकिन विद्रोहों को बुरी तरह से कुचल दिया जाता था। जमींदार और व्यापारी वर्ग की तुलना में उनकी स्थिति बहुत खराब थी। तुलसीदास के साहित्य में यह पीड़ा मौजूद है। अकाल और भूख की पीड़ा का मार्मिक चित्रण तुलसीदास ने किया है।

- तुलसी ग्रामीण चेतना के कवि हैं। उनका साहित्य तत्कालीन ग्रामीण समाज की दशा का दस्तावेज है

“खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,

बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।

जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोच बस,

कहै एक एकन सों ‘कहाँ जाई का करी’।।”

- जमींदारों के द्वारा किसानों का शोषण होता था। उस समय के ऐसे किसान जिनके पास अपनी जमीन थी, कठिन जीवन के बावजूद खाने की और दूसरी साधारण आवश्यकताओं को पूरा करने में समर्थ थे। किंतु भूमिहीन किसानों, दस्तकारों और निचली श्रेणी के काम करने वालों की दशा और भी दयनीय थी। दरिद्रता का दुख तुलसी की निम्नलिखित पंक्तियों में देखा जा सकता है –
- "नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं।"

- जाति व्यवस्था
- ग्यारहवीं शताब्दी के आसपास हिंदू धर्म को कर्मकांड के माध्यम से एकीकृत करने की कोशिश हुई। जाति व्यवस्था बनी रही। जाति और सामाजिक रीति-रिवाज की दृष्टि से हिंदू स्मृतिकारों ने ब्राह्मणों को समाज में ऊँचा स्थान देना जारी रखा। अब भी स्मृति ग्रंथों में इस बात पर जोर दिया जाता रहा कि अपराधियों को दंडित करना और अच्छे को आँखों की पुतली समझना क्षत्रियों का धर्म है। प्रजा की रक्षा के लिए शस्त्र धारण करना भी उन्हीं का कर्तव्य है। शूद्रों का कर्तव्य दूसरी जातियों की सेवा करना था। शूद्रों के साथ अछूत का व्यवहार जारी रहा।

- मुस्लिम समाज भी नस्ल और जातिगत वर्गों में विभाजित रहा। तुर्कों, इरानियों, अफगानों और भारतीय मुसलमानों में एक दूसरे के साथ वैवाहिक संबंध नहीं होता था। मुसलमानों में श्रेष्ठता की भावना, पारस्परिक विवाहों का धार्मिक निषेध और एक साथ बैठकर भोजन न करने के कारण हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सामाजिक मेल-मिलाप अधिक नहीं था। इन प्रतिबंधों के बावजूद हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सामाजिक संपर्क बना रहा। भक्ति आंदोलन की कृष्ण मार्गी धारा में कई भक्त मुसलमान थे। जाति व्यवस्था का विरोध नाथों और सिद्धों ने किया और आगे इस परंपरा में संत भक्तों की वाणियों को देखा जा सकता है।

- **कबीर कठोर शब्दों में पूछते हैं :**
- “जे तूं बाभन बाभनी का जाया । तौ आन बाट होई कहै न आया।”

- तुलसीदास के साहित्य में वर्ण-व्यवस्था को लेकर अंतर्विरोध है। कहीं तो वे वर्ण-व्यवस्था का समर्थन करते हैं और कहीं इस वर्ण-व्यवस्था से क्षुब्ध होकर लिखते हैं –

“धूत कहो अवधूत कहौ, रजपूत कहौ, जोलहा कहौ कोउ।
काहू की बेटी सों बेटा न ब्याहब, काहू की जाति बिगार न सोउ।।
तुलसी सरनाम गुलाम है रामु को, जाको रुचै सौ कहै कछु ओऊ।
माँगि के खैबो मसीत को सोइबो, लैबो एकु न देबे को दोऊ।।”